एक बनो नेक बनो

विनोबा

एक बनो और नेक बनो

आचार्य विनोबा

प्रकाशक

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी-२२१००१

Email: sarvodayavns@yahoo.co.in

एक बनो : १ :

हम गाँववालों को समझाते हैं कि आप एक ही गाँव में अड़ोस-पड़ोस में रहते हैं, तो दो काम कीजिये : एक बन जाइये और नेक बन जाइये। फिर आप पर कोई संकट या दुःख नहीं आयेगा। रेलवे-स्टेशन पर टिकटघर के पास पचासों लोग इकट्ठे होते हैं, लेकिन कोई भी एक-दूसरे की परवाह नहीं करता-हरएक को अपनी ही अपनी फिक्र रहती है, क्योंकि वहाँ पर कोई परिवार नहीं होता, समूह होता है। अगर गाँव की भी ऐसी ही हालत हो जाये कि गाँव में हर कोई अपना-अपना स्वार्थ देखे, पड़ोसी की चिन्ता न करे, तो कैसे चलेगा? एक गाँव में एक साथ रहते हैं, तो एक बनना ही चाहिए। उसके लिए यही करना होगा कि गाँव की जमीन एक कर ली जाय।

कुछ लोग कहते हैं कि हम जमीन के मालिक हैं, हमारे पास कागज हैं । लेकिन कागज से क्या कोई मालिक बनता है? अगर हम मालिक होते, तो मरते क्यों? हम चले जाते हैं, और यह जमीन यहीं पड़ी रहती है। हम कहते हैं कि यह घर 'मेरा' है, लेकिन घर में जो चूहे रहते हैं, वे भी कहते हैं कि घर 'मेरा' है। वे चूहे उस घर पर एक कौड़ी भी खर्च नहीं करते, फिर भी वे घर को छोड़ते नहीं। तो जैसे वे मूर्ख चूहे कहते हैं कि घर 'मेरा' है, वैसे ही हम भी मूर्ख बनकर कहते हैं कि जमीन 'मेरी' है, घर 'मेरा' है। वह चूहा भी मर जाता है और हम भी मर जाते हैं। घर न चूहे का है, न मेरा है। उसी तरह यह जमीन भी मेरी नहीं है। यह ठीक है कि हमें जमीन से खाना मिल जाता है, लेकिन खाने का हक सबको है। हम कहते हैं कि यह खेत 'मेरा' है। 'मैंने' फसल बोयी है। इस पर 'मेरा' हक है। लेकिन इधर किसान 'मेरा'-'मेरा' कहता रहता है, उधर पंछी आकर फसल खाते चले जाते हैं ! तो क्या फसल पर पंछियों का हक नहीं है?

पंछियों का हक

एक किसान-औरत थी, जिसका लड़का, पति और बाप कोई नहीं था। अकेली थी। उसका एक छोटा-सा खेत था। उसी में काम करती थी। फसल की रखवारी नहीं कर पाती थी। वह मुझे अपना यह दुखड़ा सुना रही थी। सुनाते-सुनाते वह बोल उठी कि 'हाँ, पक्षियों का भी हक है। भगवान् ने उन्हें पैदा किया है, इसलिए उनका भी खाने का हक है।

हिन्दुस्तान की छोटी-छोटी किसान बहनें भी जानती हैं कि हम मालिक नहीं हैं, मालिक भगवान् है। जमीन पर अगर हमारा हक है, तो चूहों और पक्षियों का भी है। फिर हमारे अड़ोसी-पड़ोसी भाइयों का तो है ही।

सनतों की सीख

जमीन का मालिक भगवान् है। अब अगर हम उसके मालिक बन बैठते हैं तो यह बात ईश्वर की मर्जी के खिलाफ है और यदि हम उसकी इच्छा के खिलाफ चलते हैं तो कभी भी सुखी नहीं हो सकते। हमें तरह-तरह के दुःखों का अनुभव होगा। आज वैसा ही हो रहा है। अतः गाँव की सब जमीन सबकी बन जाय, तो सारे गाँववाले मिल-जुलकर काश्त करेंगे। कोई ऊँच, कोई नीच नहीं रहेगा। जो कुछ पैदा होगा, उसे परमेश्वर का प्रसाद समझकर सब लोग ग्रहण करेंगे ।

परमेश्वर सबको नंगा ही पैदा करता है चाहे कोई अमीर का लड़का हो या गरीब का। मरने पर तो हमें सब कुछ छोड़कर जाना पड़ेगा। अमीर को महल को छोड़ना पड़ेगा और गरीब को झोपड़ी। हमारा यह शरीर चन्द दिनों तक ही टिकनेवाला है। ऐसी हालत में हमें ईश्वर की सेवा में अपने शरीर का उपयोग करना चाहिए, केवल भोग भोगने में नहीं लगना चाहिए।

भूख लगती है, इसलिए हम खाना खाते हैं । प्यास लगती है, तो पानी पीते हैं। लेकिन यह सब तो जानवारों में भी चलता है। अगर खाना, पीना, सोना, दुःख भोगना और मर जाना— यही क्रम चला, तो मनुष्य और पशु में फर्क कया रहा? मनुष्य की खूबी यही है कि उसको ऐसा दिल मिला है कि वह दूसरे के दुःख से दुःखी होता है और दूसरे के सुख से सुखी। शेर को भूख लगती है और हिरन उसके हाथ में नहीं आता, तो वह दुःखी होता है। लेकिन हिरन के दुःख से शेर दुःखी नहीं होता।

सन्तों ने हमें यह सिखाया था और हम मिल-जुलकर रहते थे। लेकिन बीच में हम लोग आलसी बन गये। परिणाम यह हुआ कि पैसे का महत्व बढ़ गया और प्रेम का महत्व घट गया। जहाँ पैसा आया, वहाँ से प्रेम भागा। पैसे के कारण आज समाज में तीन श्रेणियाँ बन गयी हैं ।

समाज की तीन श्रेणियाँ

जो ऊपर वाले हैं, उनके मन में नीचे वालों के प्रति तिरस्कार होता है। मैं मानता हूँ कि उनमें भी कुछ अपवाद जरूर होते हैं। परन्तु अक्सर ऊपर वालों के मन में नीचे वालों के प्रति प्रेमभाव नहीं होता, यद्यपि उनका उनसे प्रतिदिन सम्बन्ध आता है। वे समझते हैं कि ये नीचे वाले लोग मूर्ख हैं, इनमें काम करने की बुद्धि नहीं है, ये आलसी हैं, काम में चोरी करते हैं और अगर हम इन पर नजर न रखें, तो ये काम नहीं करते। ये बैल-जैसे हैं। इसलिए हम उन्हें ज्यादा पैसा देंगे, तो भी इनके पास उसका ठीक उपयोग करने की अक्ल नहीं है। ये हमें ठगते हैं, इनमें कोई सत्य नहीं दीख पड़ता ।

नीचे वालों की ऊपर वालों के विषय में यह राय है कि ऊपर वाले सारे बदमाश और बदनीयत हैं । ये लोग उनके खेतों में और दूकानों में काम करते हैं और मुँह पर उनकी तारीफ

भी कर लेते हैं, फिर भी इनके मन में ऊपर वालों के प्रति द्वेष रहता है। इसलिए ये उनकी निन्दा करते हैं। ये ऊपर वालों से मदद माँगते हैं। मदद न मिली, तो गालियाँ देते हैं और मदद मिली, तो भी यह कहते हैं कि इसने आज दे तो दिया, लेकिन कल सवाया वसूल करेगा और पता नहीं, क्या-क्या तकलीफ देगा। दोनों का एक-दूसरे के बिना चलता नहीं, फिर भी एक के मन में तिरस्कार और दूसरे के मन में द्वेष होता है।

जो मझले हैं, उनमें होड़ चलती हैं। उनके पास बहुत ज्यादा पैसा भी नहीं होता और श्रम-शक्ति भी नहीं होती। ऊपर वालों के पास पैसा होता है और नीचे वालों के पास श्रम-शक्ति। इसलिए ये मझले लोग ऊपर वालों के साथ मुकाबला करने के लिए नीचे वालों के साथ मिल जाते हैं और नीचे वालों को लूटने के लिए ऊपर वालों के साथ एक हो जाते हैं। बड़े लोगों से जमीन लेने की बात तो वे स्वीकार करेंगे, लेकिन छोटे लोगों को देने की बात हो, तो वे कहते हैं कि इससे जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े हो जायेंगे। मझले लोगों में आपस में स्पर्द्धा चलती है। वे कभी इस पक्ष में, तो कभी उस पक्ष में दाखिल होकर अपना स्थान कायम रखने की कोशिश करते हैं।

ऊपर वालों में मुख्य भावना तिरस्कार की होती है, मझले लोगों में स्पर्द्धा की होती है और नीचे वालों में द्वेष की। इस तरह समाज के आज तीन टुकड़े हो गये हैं। हम चाहते हैं कि ये तीनों एक हो जायँ और जैसे तिपाई के तीन पाँव होते हैं, वैसे ही हमारा समाज उन तीन पाँवों पर खड़ा हो। तीनों एक-दूसरे से सहयोग करेंगे, तो समाज मजबूत बनेगा।

सर्वोदय-समाज

जहाँ लोग एक बनते हैं, वहाँ पर बड़े लोगों के मन में तिरस्कार की भावना नहीं रहेगी, छोटे लोगों के मन में द्वेष की भावना नहीं रहेगी और मझले लोगों में स्पर्द्धा की भावना नहीं रहेगी; क्योंकि वहाँ न कोई बड़ा रहेगा, न कोई छोटा और न कोई मझला—सब समान हो जायेंगे। कुछ फर्क रहेगा भी, तो हाथ की पाँच अँगुलियों के जैसा ही। पाँचों अँगुलियाँ परस्पर सहयोग करती हैं। इसलिए वे पाँच होने पर भी लाखों काम करती हैं ।

हम चाहते हैं कि समाज में पाँचों अँगुलियाँ-जैसी समानता और परस्पर सहयोग हो। समाज में सब लोग पाँच पांडवों की तरह मिल-जुलकर रहें। यह होगा तो तिरस्कार, द्वेष और स्पर्द्धारहित समाज बनेगा। हम चाहते हैं कि ऐसा समाज बने, जिसमें प्रेमभाव, आदर और सहयोग हो। इसी को हम 'सर्वोदय-समाज' कहते हैं ।

'सर्वोदय-समाज' में सबका उदय होगा, सब समान होंगे। जब गाँव-गाँव के लोग हमारे इस विचार को समझेंगे, तब वे गाँव-गाँव में 'सर्वोदय-समाज' की स्थापना करेंगे। फिर गाँव वाले कहेंगे कि हमारे गाँव की सारी जमीन, सम्पत्ति, ताकत और बुद्धि गाँव की है। हमारे गाँवों में हर मनुष्य के पास जो चीज है, वह सारे गाँव की है। हमारे गाँव में हर मनुष्य अपनी चिन्ता नहीं करता, दूसरों की चिन्ता करता है और गाँव के लोग उसकी चिन्ता करते हैं।

मालिकी का प्रभाव

जब गाँव के लोग एक-दूसरे के सुख-दुःख में हिस्सा लेंगे, तब सब सुखी बनेंगे। मनुष्य के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है, बल्कि यही बात स्वाभाविक है। परन्तु लोग भलाई को, मानवता को और सन्तों की सिखावन को भूल गये, बहकावे में आ गये और जमीन के मालिक

बन बैठे । कुछ लोग फैक्टरी के मालिक बन बैठे । इस तरह जिधर देखो, उधर मालिक ही मालिक दिखाई देते हैं।

हम तो आज तक यही कहते आये हैं कि दुनिया में मालिक एक ही है। लेकिन इन दिनों कोई छोटे मालिक हैं, तो कोई बड़े मालिक । इन मालिकों ने कहर मचा रखा है। उन्होंने दुनिया को तंग कर रखा है और खुद भी तंग हो गये हैं । ये मालिक लोग भी सुखी नहीं हैं। उन्हें सारी दुनिया से नफरत ही हासिल होती है। जो उनके खेत में काम करने के लिए जाते हैं, वे भी उन्हें ठगने की कोशिश करते हैं । जब वे बीमार पड़ते हैं, तो डॉक्टर भी बिना पैसे लिये देखने नहीं आता और इन दिनों तो इनके मरने के बाद सरकार भी इन्हें 'मृत्यु-कर' के जरिये लूटती है। अलावा इसके, इनके घरों में बाप-बेटे की आपस में बनती नहीं, भाई-भाई के झगड़े होते हैं ।

पुराणों में दो राक्षसों की कहानी आती है। दो भाई थे, जिनके बीच बड़ा प्रेम था। वे देवों को भारी हो गये। देवों ने उन्हें मोहित करने के लिए एक स्त्री भेजी। वह उनके सामने जाकर खड़ी हो गयी। दोनों भाई कहने लगे कि "यह स्त्री 'मेरी' है, मैं इसका मालिक हूँ।" दोनों आपस में लड़ पड़े। इसकी गदा उसके सिर पर पड़ी और उसकी गदा इसके सिर पर। दोनों खतम हो गये। दोनों राक्षसों के खतम होने से राजा इन्द्र सुखी हुए।

इस तरह जहाँ 'मेरा' 'मेरा' चलता है, वहाँ पर झगड़े के सिवा कोई चीज नहीं पैदा हो सकती। जो लोग मालिक कहलाते हैं, उनके घरों में झगड़े चलते हैं । इसलिए वे सुखी नहीं हो सकते। आज की समाज-रचना में न मालिक सुखी हैं, न मजदूर । हम तो मानते हैं कि मजदूर ही मालिक से ज्यादा सुखी होंगे; क्योंकि उन्हें रात को अच्छी नींद तो आती होगी।

गलती सुधारें

जैसे माँ सब बच्चों पर समान प्यार करती है, वैसे ही भगवान् सब जीवों पर समान प्यार करते हैं। किसी माँ के बच्चे आपस में लड़ें, तो माँ को कितना दुःख होगा? वह कहेगी कि तुम सब मेरे बच्चे हो, मुझसे पैदा हुए हो, प्यार से मिल-जुलकर रहोगे, तो मुझे आनन्द मिलेगा। वैसे ही परमेश्वर हमसे कहता है कि हम तुम पर समान प्यार करते हैं, तो तुम लोग भी आपस में समान प्यार करो।

भगवान् ने हमें हवा, पानी, सूरज की रोशनी और आसमान दिया है। जैसे यह सबके लिए दिया है, वैसे ही जमीन भी सबके लिए दी है। अगर कल कुछ लोग पानी के मालिक बन बैठेंगे, तो क्या भगवान् खुश होगा और अगर वह खुश न होगा, तो क्या हम आनन्द में रहेंगे? लेकिन आज कुछ लोग तो जमीन के मालिक बन बैठे हैं और बहुत से लोगों के पास बिल्कुल जमीन नहीं है। भगवान् को यह बात पसन्द नहीं आयेगी। इसलिए हमने जो गलत काम किया है, उसे सुधारना चाहिए।

अंग्रेज गये, राजा भी गये

आप जानते हैं कि इस देश पर अंग्रेजों का कब्जा था। वे कहते थे कि हम हिन्दुस्तान के मालिक हैं। हिन्दुस्तान की भूमि पर यहीं के लोग काश्त करते थे, फिर भी अंग्रेज मालिक बन बेठे थे। गांधीजी ने हमें सिखाया कि अंग्रेज इस देश के मालिक नहीं हो सकते, सब भूमि इस देश के निवासियों की है। आखिर हम लोगों ने अंग्रेजों से कहा कि कृपा करके यहाँ का कब्जा छोड़कर चले जाइये। अगर आप प्रेम से यहाँ रहना चाहते हैं, तो कोई हर्ज नहीं । आज भी यहाँ पर कुछ अंग्रेज और अमेरिकन रहते ही हैं । लेकिन वे मालिक बनकर नहीं रह सकते। जब

हमने यह कहा, तो उन्होंने हम लोगों को जेल में डाला और काफी तकलीफें दीं। आखिर जब वे समझ गये कि अब ये मानेंगे नहीं, तब उन्होंने मालिकी छोड़ दी और चले गये।

इसके बाद, ये जो राजा-महाराजा थे, वे भी मालिक बनते थे। हमने उन्हें समझाया कि मालिकी छोड़ दो, क्योंकि जमीन सबकी है। फिर तुम लोग भी प्रेम से रह सकते हो। आज उन्होंने मालिकी छोड़ी है, तो हमने उनके खाने-पीने का पहले जैसा ही इन्तजाम कर दिया है। इस तरह अंग्रेज और राजा-महाराजा गये, तो परमेश्वर को खुशी हुई। हिन्दुस्तान को दबाने वाले मालिक चले गये।

बड़े-बड़े मालिक चले गये, तो भी छोटे-छोटे मालिक अभी हैं ही। अक्सर ऐसा होता है कि साँप मेढक को पकड़ता है, तो भी मेढक मक्खी को पकड़े रहता है। यह एक मोह ही है। मूर्ख और अज्ञानी प्राणी यह जानते नहीं, लेकिन हम तो मेढक नहीं, आदमी हैं। इसलिए हमें इतनी अक्ल है कि परमेश्वर की इच्छा क्या है, यह समझें। परमेश्वर सबको समान भाव से देखता है, कोई भेदभाव नहीं करता। इसी तरह हम मनुष्यों को भी बरतना चाहिए। अगर हम सब भाई-भाई बनकर रहेंगे, तो सब सुखी होंगे।

पैसे का मोह

हिन्दुस्तान की जमीन में इतनी ताकत है कि वह हमें भूखा नहीं रख सकती। यहाँ पर गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, गोदावरी जैसी अच्छी-अच्छी नदियाँ हैं, अच्छे-अच्छे पहाड़ हैं, वनस्पतियाँ हैं, जड़ी-बूटियाँ हैं, अनाज हैं, फल, तरकारियाँ, मेवा सब कुछ है। क्या नहीं है? परमेश्वर ने कितनी उत्तम-उत्तम देनें हमें दी हैं। उसने हमें दो हाथ दिये हैं, बुद्धि दी है, हृदय दिया है। उसने हम पर कितना प्रेम बरसाया है, हमारा कितना उपकार किया है ! हमें कमी किस

चीज की है? लेकिन बीच में हम लोग भूल गये और पैसे के बहकावे में आकर भगवान् का नाम लेने के बदले पैसे का ही नाम लेने लगे।

इन दिनों तो यह होता है कि कोई पड़ोसी की भी सेवा करता है, तो पैसे माँगता है। बीमार आदमी डॉक्टर से औषधि माँगता है, तो डॉक्टर भी उससे पैसा माँगता है। पहले ऐसा नहीं था? गाँव का बढ़ई हर किसी के घर जो काम निकलता था, वह कर देता था, पैसा नहीं माँगता था। साल के अन्त में जब फसल होती थी, तब हर किसान फसल का एक हिस्सा बढ़ई के घर पहुँचा देता था। इसी तरह गाँव के लुहार, चमार, वैद्य, शिक्षक आदि गाँव की सेवा करते थे और उन्हें फसल का एक हिस्सा मिल जाता था। किसान के सुख-दुःख में सबका सुख-दुःख रहता था। लेकिन इन दिनों हर कोई हिसाब करके पैसा माँगता है। डॉक्टर तो मरने वाले से भी पैसा माँगते हैं । लेकिन पहले जिस तरह चलता था, उससे गाँव सुखी था। गाँव में जमीन का कोई मालिक न रहे, जमीन सबकी हो जाय, सब मिल-जुलकर काम करें, एक-दूसरे की सेवा करें, तो सभी सुखी होंगे। किसी खेत में कोई काम निकलेगा, कहीं कुआँ बनाना होगा, तो सब लोग मदद में दौड़ पड़ेंगे। किसी के खेत में कम फसल होगी, तो सब लोग उसे अपनी फसल का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा दे देंगे। जब हम इस तरह गाँव का परिवार बनाकर रहेंगे, भगवान् खुश होगा।

अंग्रेजों की मालिकी गयी, तो भगवान् खुश हुआ। राजा-महाराजाओं की मालिकी गयी, तो भगवान् खुश हुआ। अब छोटे-छोटे मालिक भी अपनी मालिकी छोड़ दें और परमेश्वर की भक्ति में लग जायें। यह कोई जबरदस्ती से करने की बात नहीं, परस्पर प्रेम से और एक-दूसरे को समझा-बुझाकर करने की बात है।

आज कुछ लोग जमीन के मालिक बन बैठे हैं, बाकी सब मूलिया मजदूर हैं । लेकिन ये जो मूलिया हैं, वे ही मूल हैं, वे ही बुनियाद हैं । वे काम करते हैं। अगर वे काम नहीं करेंगे, तो फसल कैसे पैदा होगी? इसलिए हम जिन्हें 'मूलिया' कहते हैं, उनका भी जमीन पर उतना ही हक है, जितना मालिक कहलाने वाले लोगों का है।

भगवान् ने हमें काम करने के लिए दो लम्बे-लम्बे हाथ दिये हैं, फिर हमें मुश्किल क्या है? भगवान् ने हमें एक छोटा-सा मुँह दिया है। अगर रावण के जैसे दस मुँह दिये होते, तो हमारी क्या हालत होती? पर भगवान् ने हमें दस मुँह वाला राक्षस नहीं बनाया। लेकिन ये शहर के लोग राक्षस होते हैं । वे अपने पास दस लोगों का अनाज रख लेते हैं। उनको धन का इतना लोभ होता है कि वे उसका ढेर जमा करके रखते हैं, लेकिन एक दिन सब छोड़कर चले जाते हैं। अगर हम इसी तरह चलेंगे, तो कभी सुखी नहीं होंगे ।

जब हम अपने हाथों से काम और दूसरों की सेवा करेंगे, तभी सुखी होंगे। लेकिन आज तो हम अपने हाथों का उपयोग छीनने में करते हैं । हमारे पड़ोसी के दो हाथ हैं और हमारे दो हाथ। अगर उसके दो हाथ और हमारे दो हाथ मिलकर काम करेंगे, तो सबको खाना मिलेगा। लेकिन आज हमारे दो हाथ उसके दो हाथों को काटते हैं और उसके दो हाथ हमारे दो हाथों को। इसीलिए सब दुःखी हैं । इसी से हम आपको समझाते हैं कि आप एक बन जाइये ।

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव में इस विचार की आग फैल जाये और जितनी अपवित्रता है, वह जल जाय। मालिकी मिट जाय, तो भेदासुर का नाश हो जाय। रावण के दस सिर थे। इन दिनों गाँवों में दसों मालिक होते हैं, इसलिए गाँव रावण बनता है। हम चाहते हैं कि हर गाँव दस सिर वाला राक्षस न बने, एक सिर वाला मनुष्य बने ।

ताकत बढ़ाने की युक्ति

हम एक छोटी-सी बात बताते हैं। हिन्दुस्तान में पाँच लाख छोटे-छोटे गाँव हैं। उस हिसाब से औसत गाँव नौ सौ लोगों का होता है। समझने की बात है कि इन छोटे-छोटे गाँवों के लोग अगर अलग-अलग रहते हैं, इन्हें बाहर से कोई भी मदद नहीं मिलती है, तो ऐसे गाँवों की ताकत कैसे बढ़ सकती है? ये बहुत कमजोर रहेंगे। इसलिए हमने उनकी ताकत बढ़ाने की एक युक्ति बतायी है। गाँव का एक परिवार बनाइये। उसको गाँव मत कहिये, कुटुम्ब कहिये।

अगर आप कहें कि हमारे परिवार में ढाई सौ आदमी या तीन सौ आदमी हैं, तो आपकी ताकत बढ़ जायेगी और आप बलवान् बन जायेंगे। हम चाहते हैं कि बहनें यह भाषा न बोलें कि मेरे तीन या चार लड़के हैं; बल्कि यह भाषा बोलें कि गाँव के जितने लड़के हैं, वे सब हमारे हैं। एक छोटे-से गाँव में भी अगर आप अलग-अलग परिवार बनाकर रहते हैं, अड़ोसी-पड़ोसी एक-दूसरे की परवाह नहीं करते हैं, तो सुखी नहीं हो सकेंगे। लेकिन ये गाँव परिवार बनेंगे, तो उनके जैसे सुखी कोई ही होंगे।

शहरवालों के लिए एक परिवार बनाने का काम जरा मुश्किल है। आज बड़े-बड़े शहरों की जनसंख्या दस लाख, बीस लाख या साठ लाख होती है । गाँववाले सोचते हैं कि उनके सामने हम तो बिल्कुल ही कमजोर हैं। इसलिए अगर गाँववाले अपना एक परिवार बनायेंगे, तो बलवान् बनेंगे ।

गाँव एक परिवार

एक परिवार बनाने का अर्थ यह नहीं कि सबकी रसोई एक साथ बनेगी। सहूलियत की दृष्टि से तो आज के जैसी अलग-अलग रसोई करना ही ठीक होगा। लेकिन गाँव की सारी

जमीन गाँव की बनेगी। जमीन हमारा आधार है। हमें जमीन से खाना मिलता है, हमारी गायें जमीन पर चरती हैं । हमारे मकान जमीन पर बनते हैं और मिट्टी के ही बनते हैं। हम मरते हैं, तो मिट्टी में ही मिल जाते हैं। यह धरती हमारी माता है और हम उसकी सन्तान हैं । धरतीमाता का कोई मालिक नहीं हो सकता। लेकिन आज तो कुछ लोग मालिक बन बैठे हैं और बहुत से भूमिहीन हैं ।

आपने दीमक का बनाया हुआ घर देखा होगा। छोटी-छोटी चीटियाँ भी जब मिल-जुलकर काम करती हैं, तो कितना सुन्दर घर बनाती हैं। हमने तो उस घर को 'भुवनेश्वर' नाम दिया है। जंगलों में जहाँ शेर रहते हैं, वहाँ भी वे निर्भरता से टिकती हैं । उनसे सबक लेना चाहिए। अगर वे दीमक अलग-अलग रहेंगी, तो कया दुनिया में टिकेंगी? लेकिन वे एक साथ रहती हैं, और कहती हैं कि यह 'भुवनेश्वर' हमारा सबका है, वे 'मेरा'-'मेरा' नहीं कहतीं। इसी तरह हम भी 'मेरा'-'मेरा' कहना छोड़ देंगे, तो सुखी होंगे ।

गाँव की कुल जमीन हमारी है, कुल दौलत हमारी है। हम सब लोग भाई-भाई हैं। सहूलियत के लिए हर घर में थोड़ी-थोड़ी जमीन बाँटी जायेगी, लेकिन मालिक तो गाँव रहेगा। किसी के खेत में मदद की जरूरत होगी, तो वह हक के साथ सबको बुलायेगा । किसी के खेत में फसल कम आयेगी, तो लोग उसे अपनी फसल का हिस्सा देंगे। जमीन तो सबके लिए है, क्योंकि वह भगवान् ने पैदा की है। हम एक मुट्ठी भी पैदा नहीं कर सकते। पांडव पाँच ही थे। उन्हें जंगलों में घूमना पड़ा था, फिर भी वे निर्भय रहे; क्योंकि वे मिल-जुलकर रहते थे। भगवान् ने भी उन्हीं के पक्ष में अपना जोर लगाया। इस तरह जो लोग मिल-जुलकर रहेंगे, एक-दूसरे के लिए त्याग करेंगे, वे छोटे नहीं रहेंगे, भगवान् उनकी मदद करेंगे ।

भारत की विशेषता

आज दुनिया में बहुत अशान्ति है। हिन्दुस्तान में काफी दुःख है, लेकिन जितना दुःख है उतनी अशान्ति नहीं है। दुःख बहुत ज्यादा है, अशान्ति कम है, क्योंकि यहाँ के लोगों के मन में शान्ति भरी हुई है। वर्षों से सन्तों ने जो तालीम लोगों को दी है, उसके कारण यहाँ के लोगों का दिमाग विपत्ति में भी शान्त रहता है। उस हिसाब से आज दुनिया में बहुत ज्यादा अशान्ति है। दुनिया के लोग एक-दूसरे से डरते हैं और खूब शस्त्र बढ़ाते हैं । लाखों लोगों को खतम करने वाले बम बनाते हैं ।

हिन्दुस्तान की हड्डियों में, खून में शान्ति है । इसलिए यहाँ के लोग विपत्ति में शान्त रहते हैं। परन्तु हम इन विपत्तियों और दारिद्र्य को मिटा दें, तो यहाँ पर खूब शान्ति रहेगी और एकता बढ़ेगी । इसलिए जो हमसे भी ज्यादा दुःखी और दरिद्र हैं, उनकी तरफ हमें ध्यान देना चाहिए। गाँव-गाँव के लोग मिलकर काम करेंगे, तो गाँव में कोई दुःखी न रहेगा। अगर हम चाहते हैं कि सारी दुनिया में शान्ति हो, तो हमें गाँव-गाँव में जमीन की मालिकी मिटानी चाहिए, जमीन गाँव की बनानी चाहिए और कारखाने देश के । मालिक कोई न रहे। यही सुख की प्राप्ति का साधन है। यह जो 'मैं' 'मेरा', 'तू' 'तूरा' चलता है, उसी भेद के कारण दिल टूटे हुए हैं। पड़ोसी-पड़ोसी के बीच, देश-देश के बीच, जाति-जाति के बीच भेद पड़े हुए हैं । हमें ये सारे भेद मिटाने हैं ।

मनुष्य के हृदय में और चिन्तन में ताकत होती है। दुनिया में एक तो विचार का बल है, दूसरा प्रेम का बल है, तीसरा धर्म का बल है। चौथा बल है ही नहीं। कानून का बल तो पीछे-पीछे आता है। इसलिए लोग प्रेम को, धर्म को और सत्य को समझें, तो सारा समाज बदल जायेगा। लाखों-करोड़ों लोग अपना जीवन चलाते हैं। कानून का तो उन्हें पता भी नहीं होता। हिन्दुस्तान में करोड़ों लोग स्नान किये बगैर भोजन नहीं करते, तो क्या इसके लिए कोई कानून

बना है? लेकिन यहाँ पर वर्षों से प्रचार हुआ है कि स्नान किये बगैर खाना नहीं चाहिए— सत्पुरुषों ने गाँव-गाँव जाकर प्रचार किया है। इस देश को सत्पुरुषों ने बनाया है।

सत्पुरुषों का देश

यह महापुरुषों का देश है। यहाँ के लोग कभी सम्पत्ति को उच्च स्थान नहीं देते। कोई विलास करता हो या इंग्लैण्ड, अमेरिका से पढ़कर आया हो, तो उसे यहाँ के लोग बड़ा नहीं मानते। किसी के पास राक्षस की ताकत है या शस्त्रास्त्र है, तो उसे बड़ा नहीं मानते। जिनके मन में प्रेम है, जीवन में त्याग है, जो भगवान् के भक्त हैं, उन्हीं को यहाँ के लोग 'बड़ा' मानते हैं।

सिकन्दर बादशाह ने हिन्दुस्तान के राजा को हराया और खुद मालिक बना। एक दिन वह रास्ते से जा रहा था, तो उसने देखा कि एक साधु बैठा है। उस साधु ने सिकन्दर को देखकर न सलाम किया, न उठकर खड़ा हुआ। सिकन्दर ने उससे पूछा। 'तू कौन है?' उत्तर में कहा : "मैं दुनिया का मालिक हूँ।" सिकन्दर घबड़ा गया। उसने सोचा कि मैं तो दुनिया को जीतने के लिए इतनी कोशिश करता हूँ, मेरे पास इतनी बड़ी सेना है और इसके पास तो कुछ भी नहीं है। फिर भी यह दुनिया का मालिक कैसे हो सकता है? उसने साधु से कहा : "तू नहीं जानता कि मैं सिकन्द्र हूँ, दुनिया का मालिक हूँ।" साधु ने जवाब दिया : "मैं तो तुझे जानता ही नहीं। फिर तू कैसे दुनिया का मालिक बना?" ऐसे फकीर हिन्दुस्तान में पहले थे और आज भी हैं ।

हिन्दुस्तान के लोग संसार में रहते हैं, पर उनका सारा चित्त परमेश्वर में रहता है। संसार को वे ज्यादा महत्त्व नहीं देते। यही बात ठीक भी है; क्योंकि इसी से हिन्दुस्तान के लोग दस हजार साल से टिके हुए हैं ।

मिल-जुलकर काम करना सीखेंगे, तो आपको बाहर की मदद भी आसानी से मिलेगी। आपकी अन्दर की ताकत भी बढ़ेगी और ईश्वर की कृपा भी होगी। आपके गाँव में मधुर वाणी ही सुनायी देनी चाहिए। कटु शब्द नहीं सुनायी पड़ने चाहिए। हमेशा सत्य ही बोलना चांहिए। आप दो हाथों से काम करेंगे, एक-दूसरे पर प्यार करेंगे और राम-नाम का जप करेंगे तो सुखी होंगे ।

ग्राम-समाज का चिन्तन

आज हर कोई अलग-अलग चिन्ता करता है। लेकिन अब हरएक को इस तरह की चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी। अब हरएक सोचेगा कि ग्राम-समाज का भला कैसे हो ! जब मनुष्य लोग इस तरह सोचेंगे, तो उनकी बुद्धि का विकास होगा। जब मनुष्य को सारे गाँव के लिए सोचने की आदत पड़ जायेगी, तब मनुष्य उन्नत होगा। आज हर एक को अपनी, अपने खेत की, अपने बाल-बच्चों की चिन्ता करनी पड़ती है। उसकी चिन्ता में दूसरा कोई हिस्सा नहीं लेता। फिर उसकी अक्ल को जैसा सूझता है, वैसा करता है। कभी कर्ज भी निकालता है। अगर उसने गलत काम किया, तो लोग उसकी हँसी उड़ाते हैं, उसकी मदद नहीं करते । वे कहते हैं कि यह कैसा मूर्ख है कि इसने अपनी शक्ति के बाहर कर्ज लिया है, अब उसका फल भोग रहा है। लोग संमझते नहीं कि वह मूर्ख अपने गाँव का ही है, इसीलिए उसका सवाल अपने गाँव का सवाल है। सबको मिलकर उसकी मदद करनी चाहिए। इसलिए हम बार-बार कहते हैं कि मालिकी मिटा दो और गाँव का एक परिवार बना लो, तो खूब सुख पाओगे, भगवान् की कृपा बढ़ेगी, हर एक की बुद्धि बढ़ेगी, हृदय शुद्ध होगा, फसल बढ़ेगी, दुःख और दारिद्र्य घटेगा।

गाँव की दूकान

गाँव को एक करने और गाँव का उत्पादन बढ़ाने के लिए हमने एक ही युक्ति बतायी है। एक ही कुञ्जी से दोनों ताले खुलेंगे। हमने कहा है कि गाँव की सारी जमीन गाँव की बना दीजिए और सारे गाँव का परिवार बनाइये, तो गाँव में एकता आयेगी । फिर गाँववाले निश्चय करेंगे कि हम अपने गाँव में बाहर का कपड़ा नहीं आने देंगे, अपना कपड़ा गाँव में ही बनायेंगे। आज तो गाँव में हर कोई अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार बाहर की चीजें खरीदता है। इस हालत में उत्पादन कैसे बढ़ेगा? अगर गाँव में कोल्हू चलता है और गाँव वाले उसका तेल नहीं खरीदते, बाहर का खरीदते हैं, तो वह धन्धा कैसे टिकेगा? इसलिए सब गाँव वालों को मिलकर गाँव की भलाई के लिए निश्चय करना होगा। आज तो बाहर के व्यापारी गाँव वालों को लूटते हैं । हमने एक गाँव में देखा था कि वहाँ पर चार हजार रुपये का कपड़ा और दो हजार रुपये का नमक आता था। इतना कीमती नमक दुनिया भर में कहीं नहीं आता होगा। इसका मतलब यही हुआ कि व्यापारी गाँव वालों को ठगते हैं। लेकिन गाँव वाले मिलकर अपनी एक दूकान खोलेंगे, तो उनको कोई ठग नहीं सकेगा।

ये सब काम करने के लिए गाँव की जमीन गाँव की बनाइये। जमीन का मालिक तो परमेश्वर है। गाँव वालों को रोज शाम को इकट्ठे होकर प्रार्थना, श्रवण, पठन आदि करना चाहिए और गाँव की भलाई के बारे में सबको मिलकर सोचना चाहिए। सारे गाँव में कया बोना है, कितना बोना है, स्वच्छता किस तरह रखनी है, दूकान कैसी बनानी है, इस बारे में आज सोचता ही कौन है?

दलबन्दी से बचें

आप लोग गाँव का एक परिवार बनाइये और प्रेम से रहिये। यही बात समझाने के लिए मैं गाँव-गाँव घूम रहा हूँ। लेकिन इधर तो हम एकता करने जा रहे हैं, उधर लोग अलग-अलग पार्टियाँ बनाकर देश को तोड़ रहे हैं। एक है कांग्रेस पार्टी, एक है स्वतंत्र पार्टी, एक है समाजवादी पार्टी, एक है कम्युनिस्ट पार्टी । हर कोई एक-दूसरे के विरुद्ध बोलता है। इस तरह अलग-अलग पार्टी वाले काम बिगाड़ते हैं।

हिन्दुस्तान में ये जो पार्टियाँ बनी हैं, वे जाति-भेदों से कम खतरनाक नहीं हैं । इसलिए मैं गाँव वालों को समझाता हूँ कि आप इन पार्टी वालों से कहिये कि वे अपनी पार्टियाँ शहर में ही रखें, हमें इनकी कोई जरूरत नहीं है। हमारे गाँव में एक ही पार्टी है। उसका नाम है, 'गाँव-पार्टी' ।

आप गाँव में एक ही पार्टी बनाइये और गाँव के टुकड़े न होने दीजिए। शहर की पार्टी वाले आपसे वोट माँगने के लिए आयें, तो उनसे कहिये कि अपने गाँव में हमें ये सारे झगड़े नहीं चाहिए। जो अच्छा मनुष्य होगा, उसी को हम वोट देंगे। आप अपने झगड़े कटक और दिल्ली में, कलकत्ता और बम्बई में रखिए, जहाँ बहुत अक्ल वाले लोग रहते हैं। गाँव को आग लगाना आसान है, परन्तु उसे बुझायेगा कौन? एक दफा गोकुल में आग लगी थी, तो भगवान् कृष्ण सारी आग पी गये। इस तरह आग पीने वाला कोई है? इसलिए हम आपसे कहते हैं कि आप गाँव का एक परिवार बनाकर मिल-जुलकर रहिए।

यह हुई—एक बनने की बात।

नेक बनो : २ :

दूसरी बात है, नेक बनने की। एक होंगे, तो नेक बन ही जायेंगे। फिर भी जो कुछ बुराइयाँ रहेंगी, उन्हें छोड़ना होगा। हमारे दर्शन के लिए कुछ भाई बड़ी श्रद्धा से आये थे। लेकिन हमने देखा कि उनके कान पर बीड़ी थी। कान तो हरि-कथा सुनने के लिए हैं, बीड़ी रखने के लिए नहीं। इस तरह की बुराइयाँ छोड़नी होंगी ।

व्यसन छोड़ें

कुछ लोग कहते हैं कि देवी और देवताओं को शराब देनी चाहिए। लेकिन यह बिल्कुल गलत बात है और शास्त्रों के विरुद्ध है। भगवान् शराब नहीं चाहते। वे क्या चाहते हैं। आप लोग जानते हैं। कुछ लोग प्रेम से हमारे पास आये और फल-फूल देकर चले गये। इसी तरह भगवान् को फूल और फल देने चाहिए, यह बात आप जानते हैं। नहीं तो आप हमें भी शराब ही देते । लेकिन आप जानते हैं कि साधु पुरुष शराब नहीं पीते, फिर आप देवी-देवताओं को शराब क्या देते हैं? जिसने यह रिवाज शुरू किया, वह शैतान रहा होगा। इसलिए आपको यह सब छोड़ना होगा।

प्रार्थना करें

हम चाहते हैं कि गाँव के लोग भक्त बनें। प्रतिदिन परमेश्वर की प्रार्थना करें। किसान के काम के साथ जैसे परमेश्वर का सम्बन्ध रहता है, शहर वालों का उस तरह परमेश्वर के साथ सम्बन्ध नहीं रहता। चाहे देश में फसल कम आये या ज्यादा, शहर वालों का कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। इसलिए गाँव वाले शहर वालों की बुराइयों का अनुकरण करेंगे, तो तबाह हो जायेंगे ।

खादी बना लें

हमें मिल-जुलकर काम करना चाहिए। अपना कपड़ा अपने हाथ से बनाना चाहिए। तुलसीदासजी ने कहा है कि 'पराधीन सपनेहूँ सुख नाहीं' हम अगर बाहर से कपड़ा खरीदेंगे, तो पराधीन बन जायेंगे। सूत कातने का काम हर कोई कर सकता है। फिर गाँव में कताई, तुनाई, बुनाई, रँगाई, सिलाई आदि सारे काम चलेंगे। जमीन के बँटवारे के साथ ग्रामोद्योग जरूरी है। इन दोनों को हम 'सीताराम' कहते हैं । भूदान-यज्ञ 'सीता' है और ग्रामोद्योग 'राम'। इस तरह जब 'सीताराम' 'सीताराम' चलेगा, तब गाँव में कोई दुःखी नहीं रहेगा।

उपज बढ़ायें

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव में फसल खूब बढ़े, घर-घर में चरखा चले, घर-घर में गाय-बैल हों और सब बच्चों को खूब दूध मिले, हर एक के पास औजार हों, गाँव में कोई भी आये तो उसे खिलाने के लिए हर घर में खूब अनाज हो, बगीचे में फल-फूल लदे हुए हों, तरह-तरह की तरकारियाँ हों। यह सारा गाँव में खूब हो। लेकिन पैसा कम हो। यह पैसा तो इसलिए बनाया है कि उससे लूटने वालों को सहूलियत होती है।

ज्ञानी बनें

हम पढ़ना-लिखना इसलिए सीखेंगे कि हमें रामायण, भागवत, गीता पढ़नी है। अगर यहाँ के लोगों में आत्मविद्या आ जाय तो दुनिया में उन्हें कोई जीत नहीं सकेगा। आत्मविद्या सिखाती है कि केवल यह शरीर ही मेरा नहीं है। सब शरीर मेरे ही हैं, हम सब में एक ही परमात्मा का अंश है।

पाँच मुख्य बातें

एक और बात, नेक बनने के लिए आपको पाँच बातें करनी हैं :

1. कुल जमीन गाँव की बनाना,
2. कपड़ा, तेल, गुड़, जूता, साबुन आदि चीजें गाँव में ही बनाना,
3. शराब, बीड़ी आदि बुरे व्यसन छोड़ देना,
4. झगड़ा नहीं करना और अगर कहीं झगड़ा हो जाय तो गाँव के सज्जनों के द्वारा ही उसका फैसला करवा लेना और
5. प्रतिदिन शाम को रामायण, भागवत, गीता आदि पढ़ना।

निश्चय कीजिए कि हम भक्त बनेंगे, काम-क्रोध को छोड़ेंगे, गाँव में किसी भी प्रकार के भेदभाव नहीं रहने देंगे। तभी गाँव-गाँव में 'ग्राम-राज्य', 'राम-राज्य' या 'सच्चा स्वराज्य' होगा। अगर ये पाँच बातें आप करेंगे, तो 'सर्वोदय-समाज' बनेगा।

सब पर प्यार कर

आज हम गाँव में एक साथ रहते हैं, पर एक-दूसरे पर प्यार नहीं करते। घर में भाभी, बहन, माँ हैं—बस, इन दो-चार पर हम प्यार करते हैं, उन्हीं का ख्याल रखते हैं । बाकी किसी का ख्याल नहीं रखते। इसका नतीजा यह होता है कि गाँव में अच्छी चीज नहीं बनती। गाँव में जुलाहा है, बुनकर है। लेकिन उसका बुना हुआ कपड़ा गाँव वाले नहीं खरीदते। वह कपड़ा बाहर जाता है यह प्यार नहीं है। अगर गाँव वाले एक-दूसरे से प्यार करते हों, तो हमें तय करना चाहिए कि गाँव में जो कपड़ा बनेगा, वही हम खरीदेंगे और वही पहनेंगे। गाँव के चमार का ही

जूता पहनेंगे। बुनकर का कपड़ा चमार पहने और चमार का जूता बुनकर खरीदे, तो दोनों को एक-दूसरे की मदद होगी। आज वह मदद नहीं होती है। दोनों एक ही गाँव में रहते हैं। पर उन्हें एक-दूसरे की फिक्र नहीं है, चिन्ता नहीं है। वह होनी चाहिए।

मानवता का आधार

एक-दूसरे पर प्यार करना हमारा फर्ज होता है। इन्सान का मजहब है—मुहब्बत करना, एक-दूसरे की फिक्र करना। गधा, बैल, कुत्ता आदि क्या कभी एक-दूसरे की फिक्र रखते हैं? नहीं । जानवर कहते हैं कि अपने को मिला तो बस है। लेकिन इन्सान को इससे तसल्ली नहीं होती । गरमी के दिन हैं । आपके पास एक प्यासा आता है। आप प्यासे हैं और आपके पास बैठा हुआ मैं भी प्यासा हूँ, तो बताइये, उस समय आप क्या करेंगे? इसी में इम्तहान है। मैं प्यासा हूँ, इसलिए मैं ही पानी पी लूँ, यह बात तो बच्चा भी समझता है। पर इसमें इन्सानियत नहीं है। इन्सानियत तो इसमें है कि हमें भले ही तकलीफ उठानी पड़े, पर हम दूसरे की फिक्र करें । दूसरे के लिए तकलीफ उठाना खुशी की बात है, यह मानना चाहिए।

आपके पास थोड़ी जमीन है तो भी थोड़ा हिस्सा दीजिए, देने में हिचकिचाइये नहीं। देना धर्म है। हवा, पानी और सूरज की रोशनी—यह ईश्वर ने अपने बच्चों के लिए पैदा की है। उसी तरह जमीन भी ईश्वर ने पैदा की है। उस पर सब का हक है। गाँव में जो चीज बनती है, वही हम खरीदें—इस तरह गाँव के धन्धे हम खड़े रखें। एक-दूसरे पर प्यार करें । यही मजहब है, धर्म है, इन्सानियत है ।

दो दृष्टियाँ

जब इन्सान ऊपर देखता है तो उसके दिल में हसद, जलन, ईर्ष्या पैदा होती है। लखपति करोड़पति की तरफ देखता है तो दुःखी होता है। वह सोचता है कि मेरे पास तो सिर्फ लाख ही रुपये हैं, दूसरे के पास करोड़ रुपये हैं। वह कितना खुशहाल है। इस तरह वह अपने को कमजोर पाता है और उसके मन में दहशत पैदा होती है। जो शख्स नीचे की तरफ देखता है, उसे दुःखी जमात दिखाई देती है। वह देखता है कि लोग कितने गरीब हैं, गये-बीते हैं। उनकी फिक्र करने वाला कोई नहीं है तो वह समझता है कि इनसे मैं बहुत खुशहाल हूँ। मुझे पचास रुपये मिल रहे हैं। दुनिया में कई लोग ऐसे हैं, जिन्हें कुछ भी नहीं मिलता है । यों सोचकर वह अपने पचास रुपये में से पाँच रुपये खैरात के लिए निकालता है। इस तरह नीचे देखने से पचास रुपये वाले के दिल में हमदर्दी, रहम पैदा होता है और ऊपर देखने से पाँच लाख पाने वाला भी दुःखी होता है।

पहाड़ पर पानी गिरता है तो नीचे की तरफ जाता है। कहीं भी लोटाभर पानी डाला जाय तो वह नीचे की तरफ ही दौड़ेगा। दुनिया का कुल पानी सबसे नीचे जो समुद्र है, उसकी तरफ दौड़ता है। पानी की यह सिफत हमें लेनी चाहिए। हमें भी समाज में जो सबसे दुःखी हैं, गरीब हैं, उनकी मदद में दौड़ना चाहिए। इसी में इन्सानियत है । अगर ऊपर देखा करोगे तो दिल में खयाल आयेगा कि हमें और ज्यादा मिलना चाहिए। इस तरह हविस बढ़ाते जाना इन्सानियत नहीं है। यह तो इन्सान के जिस्म में छिपी हुई हैवानियत है, पशुता है।

खिलाकर खाना ही इन्सानियत

घर में खाना भरा हुआ होने पर भी इन्सान फाका करता है, रोजा रखता है, यही उसकी इन्सानियत है। इन्सान को अपनी इन्द्रियों पर जब्त रखना चाहिए। उसे सोचना चाहिए कि मैं दुःखी हूँ, लेकिन मुझसे भी कोई ज्यादा दुःखी है। उसकी तलाश में मुझे जाना चाहिए और उसे ढूँढ़कर उसकी मदद करनी चाहिए। इन्सान के लिए यही जीनत है, शौकत है, शान है कि दूसरे को खिलाकर खाये, पिलाकर पिये। इन्सान को सोचना चाहिए कि पहले दूसरे को मिले, फिर मुझे मिले। पहले दूसरों को खाना मिले, फिर मुझे मिले। घर में माँ की इज्जत सबसे ज्यादा है, क्योंकि वह सबको खिलाकर, खायेगी, पिलाकर पीयेगी, सुलाकर सोयेगी। अगर माँ बच्चे से कहे कि 'बेटा, घर में एक ही पाव दूध है। मैं कमजोर हो जाऊँगी तो तेरी खिदमत कैसे कर पाऊँगी, इसलिए उस दूध पर पहला हक मेरा है। मैं पहले दूध पीऊँगी और फिर बचेगा तो तू पी सकेगा', तो उसकी इज्जत नहीं रहेगी। लेकिन माँ कहती है कि 'बेटा, दूध थोड़ा है, तू पहले पी ले। इन्सानियत इसी में है कि हम यह देखें कि अपने से भी ज्यादा गिरी हुई हालत में कोई शख्स है, तो उसकी तलाश की जाय और उसकी खिदमत की जाय। कोई शख्स यह नहीं कह सकता है कि मैं दुनिया में सबसे ज्यादा दुःखी हूँ। यह अल्लाह की कुदरत है कि यहाँ एक-से-एक बढ़कर ऊँचे और नीचे लोग हैं । इसलिए जो गिरी हुई हालत में है, वह भी पायेगा कि कोई मुझसे भी गरीब है, तो मुझे उसकी इमदाद करनी चाहिए। दुःखियों की मदद करना दुःखी का भी काम है।

कुएँ से आप एक बाल्टी भर पानी निकाल लेते हैं, तो कुएँ में बाल्टी की शक्ल का गड्ढा नहीं पड़ता है, क्योंकि पानी की बूँदों में इतनी हमदर्दी है कि जहाँ आपने पानी निकाला, वहाँ चारों तरफ से पानी की बूँदें गड्ढा भरने के लिए दौड़ती हैं और गड्ढे को पाट देती हैं। लेकिन गेहूँ

के ढेर में आप एक सेर गेहूँ निकाल लीजिये, तो यह नजारा दीखता है कि उसमें एक गड्ढा पड़ता है। गेहूँ इतने बेवकूफ और खुदगर्ज होते हैं कि ऐसे ही बैठे रहते हैं। गड्ढा भरने के लिए दौड़ते नहीं। लेकिन कुछ महात्मा-गेहूँ गड्ढे की तरफ दौड़े जाते हैं। पानी की बूँदों से हमें सबक सीखना चाहिए। बाबा की यह मांग है कि चाहे आप खुशहाल हों या दुःखी, आपको कुछ-न-कुछ देना चाहिए। देने की फिजा पैदा करनी है। देना इन्सान का फर्ज है, यह समझ कर देना चाहिए। आप अपने दो हाथों से देते चले जाइये तो हजार हाथों से पाइयेगा। देने में बड़ा लुत्फ आयेगा। देने का सौदा बड़ा फायदेमन्द है।

दया से ही सन्तोष

प्यासे को पानी पिलानेवाले को प्यासे से ज्यादा तसल्ली मिलती है, क्योंकि इसमें इन्सानियत है। अल्लाह ने इन्सान को सबसे बड़ी जो चीज बख्शी है, वह है इन्सानियत। उसी को हम रहम, हमदर्दी या करुणा कहते हैं। यह चीज जितनी जिस शख्स में होगी, उतनी ही उसकी जिन्दगी में, अन्तःकरण में इतमीनान होगा, सुकून होगा। उतनी ही उसे शान्ति मिलेगी।

कुरानशरीफ में आया है कि 'तुम रोजा रखो।' किसी वजह से रोजा नहीं रख सके तो क्या उसके लिए भी कोई उपाय है, इलाज है? हाँ, कुरानशरीफ ही बताता है कि 'रोजा नहीं रख सकते तो गरीबों को खिलाओ।' मानी यह हुआ कि भले मानुष ! तू रोजा नहीं रख सकता तो मत रख, लेकिन भूखे की तकलीफ समझ ले, गरीब की तकलीफ समझ ले। जो भूखा है, उसे पहले खिला ! यह पहला फर्ज है। जो यह नहीं करता, वह कुछ भी नहीं जानता। उसे धर्म छुआ ही नहीं है। फिर वह चाहे कितनी ही लम्बी-चौड़ी किताबें पढ़ता हो, पूजा-इबादत करता हो, लेकिन तंग-दिल है तो उस शख्स में यह सब होने पर भी इन्सानियत नहीं है। उसमें इल्म हो, वह बड़ा आलिम हो, लेकिन हमदर्दी न हो, तो इन्सानियत भी नहीं है। फिर जिस इन्सान में

इन्सानियत नहीं है, उसकी शक्ल-सूरत भले इन्सान की हो, लेकिन वह इन्सान नहीं है—ठीक वैसे ही, नमक में नमकीनपन न हो, खारापन न हो, शक्कर में मिठास न हो तो वह सिर्फ एक पाउडर जैसी चीज होगी, शक्कर या नमक नहीं। इसलिए आदमी में दूसरे और गुण हों या न हों, लेकिन इन्सानियत तो कम-से-कम होनी ही चाहिए।

बाजार से प्रेम नदारद

दुःख की बात है कि आज इन्सानियत ही नहीं है। बाजार में यह नहीं मिलती, प्रेम नहीं मिलता। छोटा बच्चा दो पैसे का गुड़ खरीदने के लिए बाजार जाता है, तो दूकानदार मान लेता है कि यह लूटने का अच्छा मौका है, ठग लेने का अच्छा मौका है। बेचारा बच्चा बाजार-भाव क्या जाने? इसलिए दूकानदार को मौका मिलता है। मजा यह कि कुछ लोग इधर धर्म भी करते हैं, उधर दुनिया को कसकर लूटते भी हैं; चूसते भी हैं । आज कितना दगा दिया जा रहा है ! हर चीज में मिलावट होती है। कोई चीज ऐसी नहीं, जो खालिस मिल सके। घी, दूध में तो मिलावट होती ही है, दवा तो कम-से-कम खालिस हो ! लेकिन वह भी खालिस नहीं मिलती। इतनी बेरहमी चल रही है। दवा बीमार के लिए होती है, उसमें भी मिलावट ! फिर बुरे असर होते हैं—कुदरत का कोप इन्सान के ऐसे कामों का ही परिणाम है।

अल्लाह पचास नहीं हो सकते

आज एक बड़ा भेद है मजहब का ! चाहे आप उसे अल्लाह, ईश्वर, गॉड जो भी नाम दें, है वह एक ही। पचास अल्लाह हो नहीं सकते । चाहे उसके अनेक नाम लिये जायें तो भी वे सारे एक ही परमात्मा के नाम हैं, इसे सभी जानते हैं। कोई रहम, दया, नरमी चाहता है और वह अल्लाह को रहीम कहकर उसकी इबादत करता है, तो अल्लाह से उसे नरमी मिलती है।

कोई देखता है कि मेरे दिल में झूठ-फरेब है और इसे धोना चाहिए तो वह परमात्मा को 'अलहक' (सत्य) नाम देकर सत्य की इबादत करता है। इसी तरह हर कोई अपने दिल का मैल धोने के लिए जिस किस्म के परमात्मा की जरूरत हो, उसकी इबादत करता है।

अलग-अलग मजहबों के मानी

अलग-अलग मजहबों के मानी हैं, परमात्मा के पास पहुँचने के अलग-अलग रास्ते। एक मामूली शहर में पहुँचने के कई रास्ते होते हैं। तो परमात्मा के पास पहुँचने के लिए जो अजीम हस्ती है, एक ही राह क्यों होनी चाहिए? अगर यह ध्यान में आ जाय कि अलग-अलग मजहब यानी इबादत के अलग-अलग तरीके हैं तो मजहब के झगड़े मिट जायेंगे और मिटने ही चाहिए। आज हम परमात्मा की मर्जी के खिलाफ काम कर रहे हैं । समझना होगा कि मजहब दुनिया को तोड़ने के लिए नहीं, बल्कि जोड़ने के लिए हैं, इसलिए हमें मजहब के भेद मिटा देने चाहिए।

एक ही मजहब मे अनेक पंथ, जातियाँ और पद चलते हैं। ऊँच-नीच के इस मामले ने हमारे देश को तंग कर दिया है। इसलिए हम इसे बिल्कुल खत्म करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि यह चीज नेस्तनाबूद हो जाय। इसे हम समाज-सुधार या समाज में बराबरी लाना कह सकते हैं ।

मजहबी झगड़े गलत

मजहब के झगड़े गलत हैं। सबके इबादत के तरीकों का सबको फायदा मिलना चाहिए। आपको एक तजुरबा हुआ, दूसरे को दूसरा हुआ तो एक-दूसरे के तजुरबों का एक-दूसरे को फायदा मिलना चाहिए। कोई 'सा' बोलता है, कोई 'रे', कोई 'ग', तभी संगीत बनता है। अलग-अलग सुर हों, लेकिन उनका अच्छा मेल हो तो संगीत बनता है। हिन्दुस्तान में इबादत के कई

तरीके इकट्ठा हुए हैं। सूफियों, वेदान्तियों और भक्तों ने अलग-अलग तरीके इकट्ठा किये हैं। उन सबका फायदा हमें मिलना चाहिए।

परिवार का प्यार गाँव में लागू हो

परिवार में कया होता है? लोग कमाते हैं । किसी की कमाई एक रुपया होती है तो किसी की बारह आना। लेकिन सब कमाई इकट्ठी करते हैं और वह सारे परिवार की है, ऐसा मानते हैं । घर में यह 'मेरी कमाई' यह 'तुम्हारी कमाई' ऐसी भाषा नहीं होती है। सभी कहते हैं कि वह 'हमारी कमाई' है। 'हमारी' कहने से सबको तसल्ली होती है, दिल को सुकून होता है और प्यार हासिल होता है। हर परिवार में यही होता है कि जिसे जितनी जरूरत है, भूख है, वह उतना खायेगा। सब कमाई मुश्तरका शामिल होती है। इससे हम परिवार में बड़े सुख और चैन से रहते हैं ।

परिवार में मिल्कियत अलग-अलग नहीं होती । अगर कल ऐसा कानून बन जाय कि परिवारों में भी अलग मिल्कियत होगी तो आज जो खुशी है, वह हरगिज नहीं रह सकेगी। आज घर में, परिवार में एकत्र मिल्कियत और कमाई है। इसीलिए यह 'घर' कहलाता है। आप यही बात गाँव में भी लागू कीजिए ।

शक्ति जोड़ें

आज गाँव में कोई सौ एकड़ का मालिक है तो कोई दो एकड़ का। कोई बहुत जमीन वाला है, कोई बेजमीन है। कोई मालिक है, कोई मजदूर। इस बात से गाँव के टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं। घर में सब पर बड़ा प्यार किया जाता है और गाँव में पड़ोसी पर प्यार करने में कंजूसी बरती जाती है। घर में प्यार और समाज में होड़ चलती है। मेरे घर में खाने के लिए मिठाई है,

पक्वान्न हैं, पड़ोसी के घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं। लेकिन मैं मजे से मिठाई खा रहा हूँ। उसकी और मेरी कमाई अलग है। उसके लिए मैं जिम्मेवार नहीं हूँ—यह जो ख्याल है, वह इन्सानियत के खिलाफ है। हमने प्यार को घर में कैद कर रखा है। नतीजा यह हुआ कि आज कोई सुखी नहीं है। पड़ोसी के पास सात सेर ताकत है और मेरे पास दस सेर। हमारी ताकत अगर एक-दूसरे से टकरायेगी तो मुझे 10 - 7 = 3 सेर का लाभ मिलेगा। इससे मेरा भी नुकसान होगा और उसका भी नुकसान ! लेकिन हमारी ताकत एक-दूसरे की मदद करेगी तो हम दोनों को 10 + 7 = 17 सेर का लाभ होगा।

आज जोड़ने के बदले तोड़ने का काम हो रहा है। मेरे दो हाथ और आपके दो हाथ मिलकर चार होते हैं। पर वे एक-दूसरे को काटेंगे तो 2 - 2 = 0 होगा। इसलिए गाँव वालों की जो ताकत है, वह इकट्ठी होनी चाहिए।

गाँव की ताकत

आज तक मैं इतना ही कहता था कि गाँव एक बनें, लेकिन अब कहना चाहता हूँ कि गाँव वाले एक-दूसरे के लिए मर-मिटने के लिए तैयार हों, जिससे कि गाँव एक मजबूत फौज बने। दुश्मन से लड़ने वाली फौज नहीं चाहिए, क्योंकि उसके सामने कोई दुश्मन ही नहीं है, उसके बजाय प्रेम करने वाली फौज बने । जैसे फौज वाले अनुशासन से कानून से रहते हैं, वैसे ही गाँव वाले अपना एक कानून बनायें और उसके मुताबिक चलें। राज्य का कानून अलग है, गाँव का कानून अलग होगा। गाँव के सब लोग मिलकर सोचेंगें कि गाँव की ताकत किस प्रकार बढ़ सकती है और गाँव के हर तबके के लिए क्या-क्या करना होगा। समाज में तबके होते हैं। हर तबके की जो सिफत होती है, उसे प्रकट करने का मौका मिलना चाहिए। हमारे गाँव का कोई मनुष्य दु:खी हो और वह अकेला रोता रहे, यह हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। सारा

गाँव उसके दुःख में शामिल होगा तो उसके दुःख का भार हल्का होगा। इस तरह गाँव वाले सुख-दुःख दोनों बाँट लेंगे।

दिल एक रहे

गीता में भगवान् ने अपना विराट् रूप दिखाया। उसके हजार हाथ हैं, हजार पाँव हैं, हजार कान हैं, हजार नाक हैं, हजार मुँह हैं—सभी कुछ हजार-हजार ! लेकिन दिल? दिल हजार नहीं बताया ! यह समझने की-बात है। इसलिए सबका दिल एक होना चाहिए। गाँव-गाँव का, जिले-जिले का, प्रान्त-प्रान्त का व देश-देश का दिल एक होना चाहिए। जहाँ दिल एक हो जाता है, वहाँ परमेश्वर का रूप प्रकट होता है।

कुछ लोग कहते हैं कि जमीन एक करो। हम कहते हैं कि जमीन तो एक करेंगे, लेकिन पहले ये दिल तो एक हो जायँ। ग्रामदान यानी सब गाँव का एक दिल। इस तरह से हम यह कोशिश करेंगे कि भगवान् की कृपा से पाकिस्तान, अरबस्तान, कोरिया, मिस्र, यूरोप, अमेरिका, लंका आदि सभी अलग-अलग देशों का दिल भी एक हो जाय।

* * * * *

सर्व-धर्म समन्वय-साहित्य

गीता-प्रवचन

महा गुहा में प्रवेश

विज्ञान युग में धर्म

सभी धर्म प्रभु के चरण

धम्मपदं (नव-संहिता)

मनु-शासनम्

भागवत-धर्म-सार (मीमांसा-सहित)

गीताई चिन्तनिका

ख्रिस्त-धर्म-सार

गुरुबोध-सार

कुरान-सार (हिन्दी)

रूहुल कुर्आन (अरबी)

कुरान-सार (अरबी नागरी)

जपुजी

ईशावास्य-वृत्ति

अष्टादशी (उपनिषद्-अनुवाद)

साम्य-सूत्र

अध्यात्म-तत्व-सुधा

विनयांजलि

राम-नाम : एक चिन्तन

शुचिता से आत्मदर्शन

नाम-माला

तीसरी शक्ति

स्त्री-शक्ति

नारी की महिमा

कार्यकर्ता पाथेय

आत्मज्ञान और विज्ञान

सप्त शक्तियाँ

परिवार नियोजन और संयम

गीता तत्व-बोध (दो खण्ड)

समणसुत्तं

गीता रसामृत

जीवन और सुख

जीवन और अभय

आनन्द की ओर

प्रेरणात्मक विचार

उपनिषद्-दिग्दर्शन

तनाव से मुक्ति और ध्यानदीप

आनन्दमय जीवन

ईशावास्य-दिव्यामृत

गीता-दिव्यामृत

ब्रह्मविज्ञानोपनिषद्

नीति-निर्झर

जीवन-भाष्य (भाग 1, 2, 3)

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी—२२१ ००१